आर.डी. सिंह
निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन,
रूड़की-247667

निदेशक की कलम से.....

बड़े हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की विगत वर्षो की भांति वर्ष 2007-2008 में भी हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर राजभाषा हिन्दी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के साथ-साथ अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** का प्रकाशन कर रहा है । राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास में इस तरह के प्रयास प्रशंसनीय तथा प्रेरणादायक हैं, जिससे वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेखन को व्यापक प्रोत्साहन मिलता है ।

"प्रवाहिनी" पत्रिका के प्रकाशन के पीछे सदैव यही मंशा रही है कि संस्थान के सभी पदाधिकारियों चाहे वे तकनीकी क्षेत्र से जुड़े हों अथवा गैर-तकनीकी क्षेत्र से , उन्हें राजभाषा हिन्दी में लिखने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाए ताकि वे अपने रोजमर्रा के कार्यो में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बिना किसी झिझक और अड़चन के सुनिश्चित कर सकें ।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार तथा विकास में अभिवृद्धि सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूडकी **हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा, कार्यशाला, संगोष्ठी** इत्यादि जैसे अनेकों प्रभावी कार्यक्रमों के आयोजन के साथ-साथ अपनी गृह पत्रिका **"प्रवाहिनी"** का प्रकाशन भी करता आ रहा है । प्रवाहिनी का निरन्तर प्रकाशन संस्थान के पदाधिकारियों की सृजनशीलता तथा राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी गहन अभिरूचि को दर्शाता है ।

वर्तमान अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके पारिवारजनों के अलावा संस्थानेत्तर व्यक्तियों के रोचक , ज्ञानवर्द्धक तथा महत्वपूर्ण लेखों को भी स्थान दिया गया है । पत्रिका में छपे सभी लेखों की भाषा सरल एवं सहज रखी गई है ताकि इससे सभी वर्ग के पाठक लाभान्वित हो सकें । इस प्रकार के प्रयास वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रशासनिक अधिकारियों का मनोबल बढ़ाते हैं और इससे उनकी हिन्दी में कार्य करने की रूचि भी बढ़ती है ।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक समस्त सुधी पाठकों की आशाओं के अनुरूप रोचक तथा उपयोगी होगा । इस पत्रिका को और भी रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बनाने के लिए कृपया हमें अपने सुझावों से अवगत कराने का कष्ट करें ।

मैं प्रवाहिनी के इस अंक के सम्पादन, टंकण, प्रूफ शोधन तथा प्रकाशन संबंधी कार्यो से जुड़े समस्त पदाधिकारियों तथा उन लेखकों का आभारी हूँ, जिनके ज्ञानवर्धक लेखों के माध्यम से इस अंक का प्रकाशन संभव हो सका है। मैं इस पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)